नीपको

अंक 9 वर्ष 2021

रतनदीप

राजभाषा हिंदी ई पत्रिका

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड

North Eastern Electric Power Corporation Limited

कॉर्पोरेट अफेयर्स, नई दिल्ली

CORPORATE AFFAIRS, NEW DELHI

संरक्षक

श्री एच. भराली
प्रमुख, कॉर्पोरेट अफेयर्स

सलाहकार मंडल

श्री शांतनु बेजबरूवा
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
श्रीमती एलिजाबेथ पिरबट
उप महाप्रबंधक (इलेक्ट्रिकल)
श्री राजीव रंजन
वरिष्ठ प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)
श्रीमती वांगमु रीजीजू
कनिष्ठ अभियंता (इलेक्ट्रिकल)

संपादक

सुश्री सुनीता रानी सिन्हा
सहायक हिंदी अधिकारी

डिजाइनिंग

श्री शशांक सिंह
उप प्रबंधक (सिविल)

रतनदीप पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए कार्यालय किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

पताः

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
कॉर्पोरेट अफेयर्स कार्यालय
यू.जी, फ्लोर, 15 एनबीसीसी टावर
भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066

दूरभाषः ईपीबीएक्स : (011) 26164329
फैक्स : (011) 26107555, 26188213
ई–मेल : corpaffairs@neepco.co.in

इस अंक में

नीपको गीत	3
माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	4-6
कार्यालय प्रमुख का संदेश	7
राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका	8-10
आजादी का अमृत महोत्सव	11
नीपको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विनोद कुमार सिंह को विशिष्ट जल संसाधन अभियंता पुरस्कार–2020 से सम्मानित किया गया।	12
संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के द्वारा कार्यालय का निरीक्षण	13
जीवन में योग	14
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन	15
हिंदी कार्यशाला	16-17
संत कबीर	18
सामाजिक मूल्यों की ओर	19-20
नराकास के तत्वाधान में आयोजित ऑनलाइन राजभाषा हिंदी संगोष्ठी/प्रतियोगिता	21
जीना है तो खुश रहना सीखो (कविता)	22
उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा निरीक्षण	23
भारत का वीर सपूत–स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा	24
हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस, 2020	25
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 2021 का आयोजन	26
ईश्वर चंद्र विद्यासागर	27
कोरोना की वैक्सीन	28
साइखोम मीराबाई चानू	29-30
75वां स्वतंत्रता दिवस	31
आयकर रिटर्न फॉर्म	32
हिंदी "पारंगत" पाठ्यक्रम	33
हिंदी के राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन	34
वीरों का कैसा हो वसंत (कविता)	35
नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना	36
हिंदी में प्रवीणता एवं हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान	37
कोरोना काल में बचपन	38
संक्षिप्त वाक्यांश	39

नीपको गीत

पावन सुंदर स्वच्छ नीपको हमारा।
उत्तर पूर्वांचल का ये कर्मठ सितारा।।

दक्ष परिश्रमी कर्मचारी करते श्रमदान।
गैस, जल से पैदा विद्युत ऊर्जा प्रधान।।

सर्वत्र प्रकाश फैलाता नीपको महान।
अनुशासन विकास का सूत्र लेकर हम।
ऊर्जा परियोजनाएं लगाते जाएं हम।।

क्षेत्र देश के चहुमुखी विकास को हम।
गुणवत्ता से अपेक्षित बिजली दे हम।।

कठिन परिश्रम है नारा हमारा।
पूरा विकास का है उद्देश्य हमारा।।

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

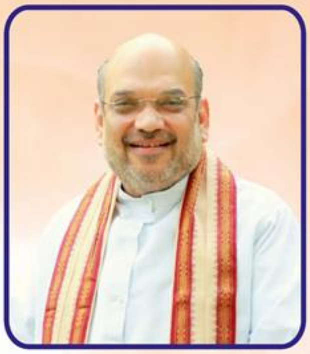

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संदेश

प्रिय साथियों,

राजभाषा गृह पत्रिका ''रतनदीप'' के 9वें अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सर्वप्रथम हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

कोविड–19 महामारी के कारण अभी भी पूरा विश्व कार्य करने की नई–नई संभावनाओं की तलाश में लगा है। ऐसी परिस्थितियों में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में कोई कमी नहीं आई है। इस दौरान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा अनेक ई–टूल्स सुदृढ़ करने का कार्य किया जा रहा है। वोकल फॉर लोकल के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में राजभाषा विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल ''कंठस्थ'' का विस्तार किया जा रहा है। जिससे अनुवाद में समय की बचत करने के साथ–साथ एकरूपता एवं उत्कृष्ठता लाई जा सकेगी। विभाग द्वारा ई–प्रशिक्षण की शुरूआत की गई है, जिसमें परंपरागत कक्षा आधारित प्रशिक्षण की पद्धति के स्थान पर ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। राजभाषा विभाग द्वारा की जा रही इन पहलों के माध्यम से हिंदी के प्रचार–प्रसार में तेजी आएगी।

हम अपने कार्यालय में संसदीय राजभाषा समिति, मुख्यालय, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–1 (दिल्ली), नराकास दिल्ली उपक्रम–2 द्वारा दिए गए निर्देशों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के पूर्ण प्रयास कर रहे हैं। कार्यालय के सभी कार्मिकों को यूनीकोड के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु प्रशिक्षित कर दिया गया है। हिंदी भाषा का प्रशिक्षण पूरा करवाया जा चुका है। हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों को हिंदी में प्रवीण करने हेतु इस वर्ष ऑनलाइन हिंदी ''पारंगत'' पाठ्यक्रम की दीर्घकालिक कक्षाओं के लिए नामित किया गया है। राजभाषा की बैठकें, कार्यशालाएं, संगोष्ठी, प्रतियोगिताएं आदि ऑनलाइन माध्यमों का प्रयोग करते हुए सफलतापूर्वक संपन्न हो रही हैं। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि हम प्रेरणा और प्रोत्साहन के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार अनवरत बढ़ाते रहें। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में आशानुरूप वृद्धि हुई है।

कार्यालय के कार्मिकों के बीच राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी गृह पत्रिका ''रतनदीप'' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो न केवल आपसी विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम है, इसके साथ ही यह कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों के विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। मैं आशा करता हूं कि आप सभी इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान देना जारी रखेंगे।

एक बार पुनः आप सबको हिंदी दिवस की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

एच भराली

(एच. भराली)
प्रमुख, कॉर्पोरेट अफेयर्स

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका

डॉ. सुमीत जैरथ,
सचिव, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

राजभाषा अर्थात राज–काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम–जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत–मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो? इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने–कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा – हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन–प्रति–दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति–विज्ञान' (डदमउवदपबे) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10 'प्र' के फ्रेमवर्क और रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं ।

प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय–समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय–समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

प्राइज अर्थात पुरस्कार (Reward)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने–कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग–अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय–समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए–ई–प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत–स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC & Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

प्रयोग (Usage)

यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it)' हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे–धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय–समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश–विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतः ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों का बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार–प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह–पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई–पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह–पत्रिकाओं का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई–पत्रिकाओं से लाभानवित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ–साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय–समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच–बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

प्रयास (Effort)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम जन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन दस 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

आजादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव उन लोगों को धन्यवाद देने का एक प्रयास है। जिनके कारण हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं। यह याद करने का समय है कि स्वतंत्रता को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए, शहीदों ने इसे प्राप्त करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। जब हम ब्रिटिश शासन के युग के बारे में सोचते हैं तो ध्यान आता है कि कैसे करोड़ों लोग आजादी का इंतजार कर रहे थे, यही ध्यान आजादी के 75 वर्षों के उत्सव को और भी महत्वपूर्ण बना देता है।

जब गाँधी जी ने दांडी यात्रा की और नमक कानून तोडा, उस दौर में नमक भारत की आत्मनिर्भरता का एक प्रतीक था। 2020 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव की शुरुआत की। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पूरे देश में आजादी के अमृत महोत्सव पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें संगीत, नृत्य, प्रवचन आदि शामिल हैं। इसके साथ ही देश की अदम्य भावना के उत्सव को दिखाने वाले कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पूरे वर्ष आयोजित किए जाएंगे। यह कार्यक्रम 15 अगस्त 2023 तक जारी रहेंगे।

हम सभी का सौभाग्य है कि हम आजाद भारत के इस ऐतिहासिक कालखंड के साक्षी बन रहे हैं जिसमें भारत उन्नति की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। आज का भारत विश्व में अपना नाम अग्रिम पंक्ति में लिखवा चुका है। हम इस पुण्य अवसर पर बापू के चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं तथा देश के स्वाधीनता संग्राम में अपने आपको आहूत करने वाले, देश को नेतृत्व देने वाली सभी महान विभूतियों के चरणों में नमन और उनका कोटि–कोटि वंदन करते हैं। आजादी का अमृत महोत्सव आज़ादी की लड़ाई के साथ–साथ आज़ाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सामने रखकर हम सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा।

नीपको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विनोद कुमार सिंह को विशिष्ट जल संसाधन अभियंता पुरस्कार–2020 से सम्मानित किया गया।

18 जून, 2021 को रुड़की में "जल स्त्रोत अनुरक्षण (Water Source Sustainability)" पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय ई–सम्मेलन में जल संसाधन विकास और प्रबंधन विभाग, आईआईटी रुड़की और भारतीय जल संसाधन सोसायटी (आईडब्ल्यूआरएस) रुड़की द्वारा जल संसाधन विकास और प्रबंधन के क्षेत्र में नीपको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विनोद कुमार सिंह को विशिष्ट जल संसाधन अभियंता पुरस्कार–2020 से सम्मानित किया गया।

नीपको NEEPCO

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के द्वारा कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के द्वारा दिनांक 08.12.2020 को कार्यालय का राजभाषा हिंदी संबंधी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान एन.आर.पी.सी. परिसर, नई दिल्ली में एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें समिति के माननीय सदस्यगण, विद्युत मंत्रालय से श्री राज पाल, वरिष्ठ सलाहकार, श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) एवं नीपको की ओर से श्री अनिल कुमार, निदेशक (कार्मिक), श्री एच. भराली, प्रमुख, कॉर्पोरेट अफेयर्स, श्री शांतनु बेजबरूवा, उप महाप्रबंधक (मा.सं.) एवं सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी उपस्थित रहे।

समिति के माननीय सदस्यों द्वारा कार्यालय में संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन एवं समिति द्वारा दी गई निरीक्षण प्रश्नावली पर विस्तृत विचार विर्मश किया गया। राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु समिति ने अपेक्षा अनुसार निर्देश दिए। निरीक्षण के सफलतापूर्वक समापन पर समिति की संयोजक प्रोफसर रीता बहुगुणा जोशी महोदया ने प्रमुख कॉर्पोरेट अफेयर्स महोदय को समिति के प्रतिवेदन के पहले नौ खण्डों पर किए गए माननीय राष्ट्रपति के आदेशों का संकलन एवं धन्यवाद पत्र प्रदान किया।

जीवन में योग

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल होना है तो फिट रहना जरूरी है। योग से तन, मन और आत्मा को निर्मल और स्वस्थ किया जाता है। योग सिर्फ आसनों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे कहीं अधिक है। सीधे–सादे शब्दों में कहा जाए तो योग में आसन, प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से हम मन, श्वास और शरीर के विभिन्न अंगो में सामंजस्य बनाना सीखते हैं। भागदौड़ भरी जीवन शैली के चलते कई तरह के रोग और शोक तो जन्म लेते ही है साथ ही व्यक्ति जीवन के बहुत से मोर्चों पर असफल हो जाता है। ऐसे में यदि हम योग के 10 उपाय अपना लें तो हमारा दिल और दिमाग सही हो जाएगा और हम अपने जीवन में सुख, शांति, निरोगी काया, मानसिक दृढ़ता और सफलता प्राप्त कर लेंगे।

1. अंग–संचालन

बहुत से लोग कहते हैं कि हमारे पास आसन करने का समय नहीं है, उन लोगों के लिए है अंग–संचालन या सूक्ष्म व्यायाम। इसे आसनों की शुरुआत के पूर्व किया जाता है। इससे शरीर आसन करने लायक तैयार हो जाता है। सूक्ष्म व्यायाम से नेत्र, गर्दन, कंधे, हाथ–पैरों की एड़ी–पंजे, घुटने, नितंब–कुल्हों आदि सभी की बेहतर वर्जिश होती है।

2. प्राणायाम

हमारे शरीर में खाना पचाने और शरीर को स्वस्थ रखने का कार्य श्वास से आ जा रही हवा करती है। इसे प्राणवायु कहते हैं। हवा निकल गई तो समझो मृत्यु हो गई। हवा ही जिंदगी है, अन्न और जल प्राथमिक नहीं है। इसीलिए इस प्राण को स्वस्थ रखना जरूरी है। इसके लिए आप अनुलोम–विलोम प्राणायाम करते रहेंगे तो यह आपके भीतर के अंगों और सूक्ष्म नाड़ियों को शुद्ध–पुष्ट कर देगा।

3. मालिश

बदन की घर्षण, दंडन, थपकी, कंपन और संधि प्रसारण के तरीके से मालिश कराएं। इससे मांस–पेशियां पुष्ट होती हैं। रक्त संचार सुचारू रूप से चलता है। इससे तनाव, अवसाद भी दूर होता है। शरीर कांतिमय बनता है और मन प्रसन्न हो जाता है।

4. व्रत

जीवन में व्रत का होना जरूरी है। व्रत ही संयम, संकल्प और तप है। इससे शरीर में जमी गंदगी बाहर निकल जाती है। यदि आप सप्ताह में एक बार पूर्ण व्रत नहीं रखते हैं तो निश्चित ही आप शरीर के साथ अन्याय कर रहे हैं। भोजन समय पर खाएं और क्या खा रहे हैं यह जरूर देखें। यह भी देखना जरूरी है कि किस मात्रा में खा रहे हैं। योग में संयमित आहार–विहार की चर्चा की गई है।

5. योग हस्त मुद्राएं

योग की हस्त मुद्राओं को करने में ज्यादा समय नहीं लगता। बस एक बार सीखने की जरूरत है। इसे आप कहीं भी कभी भी कर सकते हैं। इससे जहां निरोगी काया पाई जा सकती है, वहीं यह मस्तिष्क को भी स्वस्थ रखती हैं। हस्तमुद्राओं को अच्छे से जानकर नियमित करें तो लाभ मिलेगा।

6. ईश्वर प्राणिधान

जो व्यक्ति ग्रह–नक्षत्र, असंख्य देवी–देवता, तंत्र–मंत्र और तरह–तरह के अंधविश्वासों पर विश्वास करता है, उसका संपूर्ण जीवन भ्रम, भटकाव और विरोधाभासों में ही बीत जाता है। इससे निर्णयहीनता का जन्म होता है। जिस व्यक्ति में समय पर निर्णय लेने की क्षमता नहीं है वह जिंदगी में कभी तरक्की नहीं कर पाता। जीवन की सफलता हेतु ईश्वर पर विश्वास रखना जरूरी है, किसी एक ही देवता को अपना ईष्ट बनाने से चित्त संकल्पवान, धारणा सम्पन्न तथा निर्भिक होने लगता है।

7. ध्यान

ध्यान के बारे में भी आजकल सभी जानने लगे हैं। ध्यान हमारी ऊर्जा को फिर से संचित करने का कार्य करता है, यह हमारे मस्तिष्क को तेज बनाता है और यह हर तरह का तनाव मिटा देता है। इसलिए सिर्फ पांच मिनट का ध्यान आप कहीं भी कर सकते हैं। खासकर सोते और उठते समय इसे बिस्तर पर ही किसी भी सुखासन में किया जा सकता है।

8. प्रार्थना

बहुत से लोग हैं जिनका मन ध्यान में नहीं लगता उन्हें अपने ईष्ट की प्रतिदिन पूजा या प्रार्थना करना चाहिए। ईष्ट के चित्र के समक्ष दीया या अगरबत्ती जलाकर, हाथ जोड़कर कम से कम 10 मिनट तक उनके प्रति समर्पण एवं धन्यवाद का भाव रखकर उनकी स्तुति करने से मन और मस्तिष्क में सकारात्मकता और शांति का विकास होता है।

9. स्वाध्याय

स्वाध्याय आत्मा का भोजन है। स्वाध्याय का अर्थ है स्वयं का अध्ययन करना। आप स्वयं के ज्ञान, कर्म और व्यवहार की समीक्षा करते हुए वह सब कुछ पढ़ें जिससे आपके आर्थिक, सामाजिक जीवन को तो लाभ मिलता ही हो, साथ ही आपको इससे खुशी भी मिलती हो तो बेहतर किताबों को अपना मित्र बनाएं और स्वयं के मन को समझते हुए बेहतर दिशा में मोड़ें। यदि आप यह जानते हैं कि मैं अहंकारी हूं और इससे बहुत नुकसान होता है तो निश्चित ही आप विनम्र बन जाएंगे।

10. सत्य

सत्य में बहुत ताकत होती है यह तो सुनते ही आए हैं, लेकिन कभी आजमाया नहीं तो अब आजमाकर देखें। योग का प्रथम अंग 'यम' है और यम का ही उप अंग है सत्य। जब व्यक्ति सत्य की राह से दूर रहता है तो वह अपने जीवन में संकट खड़े कर लेता है। असत्यभाषी व्यक्ति के मन में भ्रम और द्वंद्व रहता है, जिसके कारण मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। असत्य या झूठ बोलने से व्यक्ति की प्रतिष्ठा नहीं रहती तब लोग उसकी सत्य बात का भी भरोसा नहीं करते। सत्य बोलने और हमेशा सत्य आचरण करते रहने से व्यक्ति का आत्मबल बढ़ता है। मन स्वस्थ और शक्तिशाली हो जाता है। डिप्रेशन और टेंशन भरे जीवन से मुक्ति मिलती है। शरीर में किसी भी प्रकार के रोग से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है। सुख और दुख में व्यक्ति सम भाव रखकर निश्चिंत और खुशहाल जीवन को आमंत्रित कर लेता है। जिससे सभी तरह के रोग और शोक का निदान होता है।

जीवन में योग का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। योग के यह सभी उपाय हमारे जीवन को सफल बनाने की क्षमता रखते हैं, बशर्ते हम इनका पालन ईमानदारी से करें।

श्री शांतनु बेजबरूवा

उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

7वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

भारत सरकार के आदेशानुसार 7वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उत्सव वर्चूअली आयोजित किया गया। 21 जून, 2021 को सभी कार्मिकों ने सुबह 7 बजे अपने परिवार के सदस्यों के साथ योग का अभ्यास किया। उसके बाद कार्यालय की ओर से सभी कार्मिकों को योग के महत्व और प्रभावों के बारे में और अधिक जागरूक करने के उद्देश्य से एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसका लाभ सभी कार्मिकों ने उठाया। 7वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का थीम "Yoga for well-being" था।

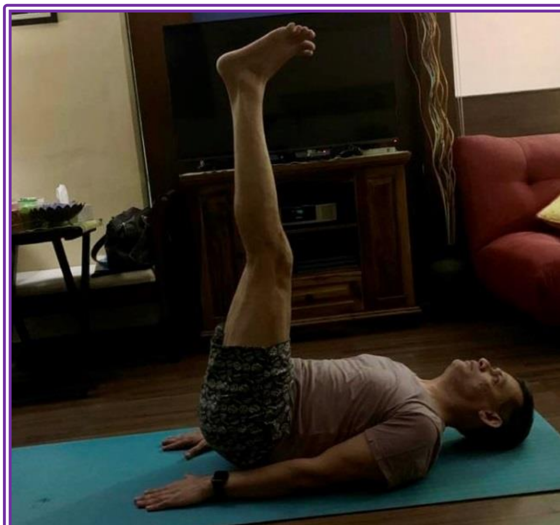

हिंदी कार्यशाला

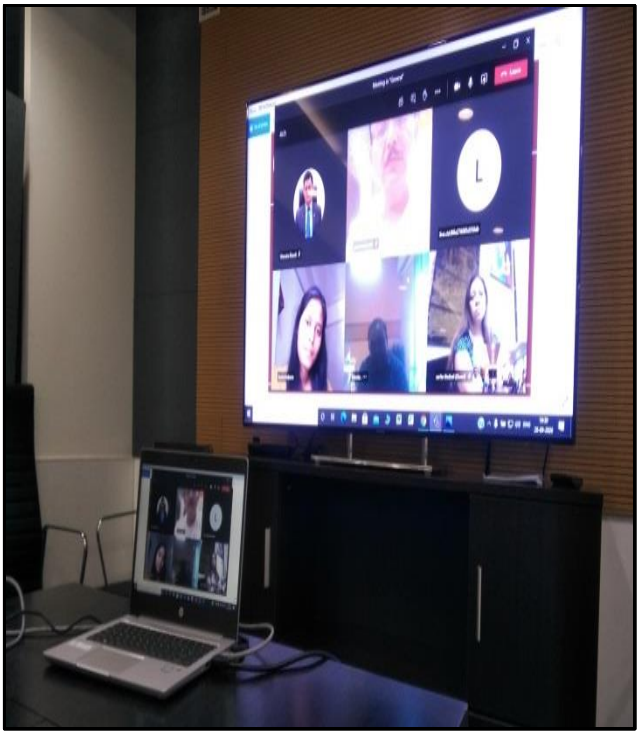

दिनांक 28.09.2020 को कार्यालय के हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों के लिए ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वक्ता के रूप में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, एनटीपीसी दादरी के सदस्य सचिव एवं उप प्रबंधक (राजभाषा) श्री आलोक अधिकारी जी को ऑनलाइन आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला से जुड़े सभी प्रतिभागियों और सदस्य सचिव का स्वागत किया और सदस्य सचिव महोदय से कार्यशाला को प्रारंभ करने का आग्रह किया। सदस्य सचिव महोदय ने सभी का परिचय लेने के बाद राजभाषा नीति एवं नियम विषय पर अपना व्याख्यान दिया। राजभाषा हिंदी के लिए संविधान में बनाए गए नीति एवं नियमों के बारे में उन्होंने बताया तथा राजभाषा हिंदी से संबंधित संवैधानिक दायित्वों को कैसे निभाना है, इसके बारे में विस्तार से चर्चा भी की। इतने गंभीर विषय को उन्होंने बड़ी सहजता और सरलता के साथ समझाया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाया तथा इसे बहुत ही उपयोगी बताया। कार्यशाला के समापन पर सहायक हिंदी अधिकारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए सदस्य सचिव महोदय का आभार प्रकट किया।

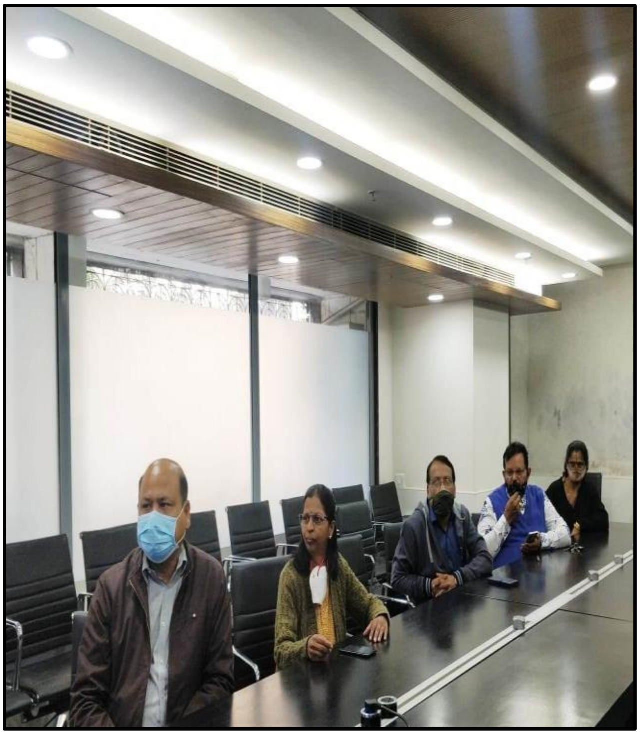

दिनांक 03.12.2020 को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों के लिए ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वक्ता के रूप में दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, डॉक्टर राजा राम यादव जी को ऑनलाइन आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला से जुड़े तथा कार्यालय में उपस्थित सभी प्रतिभागियों और वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी का स्वागत किया एवं सभी प्रतिभागियों से वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी महोदय का परिचय करवाते हुए उनसे कार्यशाला को प्रारंभ करने का आग्रह किया। वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी महोदय ने सभी प्रतिभागियों का परिचय लेने के बाद राजभाषा की उपादेयताः कार्यालय और कर्त्तव्य विषय पर अपना व्याख्यान दिया। संविधान में राजभाषा हिंदी के लिए बनाए गए नीति एवं नियमों के बारे में बताने के साथ ही उन्होंने कार्यालय में राजभाषा की क्या उपयोगिता है तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमें अपने संवैधानिक दायित्वों को कैसे निभाना है, इसके बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से बड़ी सहजता और सरलता के साथ कार्यालय में हिंदी में कार्य को बेझिझक कैसे करें इसके बारे में भी समझाया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाया तथा इसे बहुत ही उपयोगी बताया। कार्यशाला के समापन पर सहायक हिंदी अधिकारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी महोदय का आभार प्रकट किया।

हिंदी कार्यशाला

दिनांक 22.02.2021 को कार्यालय के हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों के लिए ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वक्ता के रूप में श्रीमती कमलेश बजाज, उप निदेशक (मध्योत्तर), हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली को ऑनलाइन आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला से जुड़े सभी प्रतिभागियों और उप निदेशक महोदया का स्वागत किया एवं सभी प्रतिभागियों से उप निदेशक महोदया का परिचय करवाते हुए उनसे कार्यशाला को प्रारंभ करने का आग्रह किया। उप निदेशक महोदया ने सभी प्रतिभागियों का परिचय लेने के बाद संविधान में राजभाषा हिंदी के लिए बनाए गए नीति एवं नियमों के बारे में बताने के साथ ही हमें राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों को कैसे निभाना है, इसके बारे में विस्तार से बताया। उसके बाद उन्होंने हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत चलाए जा रहे हिंदी भाषा के विभिन्न पाठ्यक्रमों पर विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध करवाई। उन्होंने बताया कि हिंदी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ के साथ ही सरकार द्वारा कार्मिकों को सरकारी काम–काज हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अधीन ऑनलाइन/नियमित हिंदी 'पारंगत' पाठ्यक्रम की दीर्घकालिक कक्षाओं का गठन एवं संचालन किया जा रहा है, हिंदी 'पारंगत' पाठ्यक्रम के बारे में उन्होंने बहुत ही उपयोगी जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों को टिप्पण और प्रारूप लेखन के नियमों के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाया तथा इसे बहुत ही उपयोगी बताया। कार्यशाला के समापन पर सहायक हिंदी अधिकारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए उप निदेशक महोदया का आभार प्रकट किया।

दिनांक 11.06.2021 को कार्यालय के हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों के लिए के लिए ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के डॉक्टर राजा राम यादव, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी को ऑनलाइन आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने हिंदी कार्यशाला में ऑनलाइन जुड़े तथा कार्यालय में उपस्थित सभी प्रतिभागियों और वक्ता महोदय का स्वागत किया एवं वक्ता महोदय से कार्यशाला को प्रारंभ करने का आग्रह किया। राजभाषा कार्यान्वयन और हमारा दायित्व विषय पर वक्ता महोदय ने अपना व्याख्यान दिया। राजभाषा हिंदी के प्रति हमें अपने संवैधानिक दायित्वों को कैसे पूरा करना है, इसके बारे में उन्होंने विस्तार से बताया। उन्होंने कार्यालय में हिंदी टूल्स के नए–नए तरीकों को अपना कर बेझिझक हिंदी में काम कैसे करें इसे बड़ी सहजता और सरलता के साथ समझाया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाया तथा इसे बहुत ही उपयोगी बताया। कार्यशाला के समापन पर सहायक हिंदी अधिकारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी महोदय का आभार प्रकट किया।

संत कबीर

एक नगर में एक जुलाहा रहता था। वह स्वभाव से अत्यंत शांत, नम्र तथा वफादार था। उसे क्रोध तो कभी आता ही नहीं था। एक बार कुछ लड़कों को शरारत सूझी। वे सब उस जुलाहे के पास यह सोचकर पहुंचे कि देखें इसे गुस्सा कैसे नहीं आता? उनमें से एक लड़का धनवान माता–पिता का पुत्र था। वहां पहुंचकर वह बोला यह साड़ी कितने की दोगे?

जुलाहे ने कहा–10 रुपए की।

तब लड़के ने उसे चिढ़ाने के उद्देश्य से साड़ी के दो टुकड़े कर दिए और एक टुकड़ा हाथ में लेकर बोला–मुझे पूरी साड़ी नहीं चाहिए, आधी चाहिए। इसका क्या दाम लोगे?

जुलाहे ने बड़ी शांति से कहा 5 रुपए।

लड़के ने उस टुकड़े के भी दो भाग कर दिए और दाम पूछा? जुलाहा अब भी शांत रहा। उसने बताया–ढाई रुपए।

लड़का इसी प्रकार साड़ी के टुकड़े करता गया। अंत में बोला–अब मुझे यह साड़ी नहीं चाहिए। यह टुकड़े मेरे किस काम के?

जुलाहे ने शांत भाव से कहा–बेटा! अब यह टुकड़े तुम्हारे ही क्या, किसी के भी काम के नहीं रहे।

अब लड़के को शर्म आई वह कहने लगा–मैंने आपका नुकसान किया है। इसलिए मैं आपकी साड़ी का दाम दे देता हूं। जुलाहे ने कहा कि जब आपने साड़ी ली ही नहीं तब मैं आपसे पैसे कैसे ले सकता हूं?

लड़के का अभिमान जागा और वह कहने लगा, मैं बहुत अमीर आदमी हूं। तुम गरीब हो। मैं रुपए दे दूंगा तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पर तुम यह घाटा कैसे सहोगे? और नुकसान मैंने किया है तो घाटा भी मुझे ही पूरा करना चाहिए।

जुलाहे ने मुस्कुराते हुए कहा– तुम यह घाटा पूरा नहीं कर सकते। सोचो, किसान का कितना श्रम लगा तब कपास पैदा हुई। फिर मेरी स्त्री ने अपनी मेहनत से उस कपास को धुना और सूत काता। फिर मैंने उसे रंगा और बुना। इतनी मेहनत तभी सफल होती जब इसे कोई पहनता, इससे लाभ उठाता, इसका उपयोग करता, पर तुमने उसके टुकड़े–टुकड़े कर डाले। रुपए से यह घाटा कैसे पूरा होगा? जुलाहे की आवाज़ में आक्रोश के स्थान पर अत्यंत दया और सौम्यता थी।

लड़का शर्म से पानी–पानी हो गया। उसकी आंखें भर आई और वह संत के पैरों में गिर गया।

जुलाहे ने बड़े प्यार से उसे उठाकर उसकी पीठ पर हाथ फिराते हुए कहा–बेटा, यदि मैं तुम्हारे रुपए ले लेता तो उससे मेरा काम तो चल जाता पर तुम्हारी जिंदगी का वही हाल होता जो उस साड़ी का हुआ। उससे कोई लाभ भी नहीं होता। साड़ी एक गई, मैं दूसरी बना दूंगा, पर तुम्हारी जिंदगी एक बार अहंकार में नष्ट हो जाती तो दूसरी कहां से लाते तुम? तुम्हारा पश्चाताप ही मेरे लिए बहुत कीमती है। संत की ऊंची सोच ने लड़के का जीवन बदल दिया। यह संत कोई और नहीं बल्कि संत कबीर दास जी थे।

श्रीमती एलिजाबेथ पिरबट
उप महाप्रबंधक (इलेक्ट्रिकल)

सामाजिक मूल्यों की ओर.....

दिन प्रतिदिन के समाचारों से हमें कत्ल, मारपीट, बलात्कार, महिलाओं के साथ छेड़–छाड़, माता–पिता/बहू/पत्नी के साथ गलत व्यवहार, जातिवाद, हिन्दू मुस्लिम दंगे और इस तरह की तमाम घटनाएं सुनने को मिलती हैं। यह सभी घटनाएं हमारे समाज के संवेदनहीन, अनैतिक एवं अमानवीय हरकतों से जुड़ी हैं। हम अपने आस–पास की स्थिति को नजदीक से देखते हैं तो पाते हैं कि हम कितने असभ्य और असंवेदनशील हो गए हैं। हम सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं चाहे इसके लिए हमें कोई भी गलत कदम उठाना पड़े।

तभी तो आज ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए मिलावटी जहरीला सामान जैसे मिलावटी सिंथेटिक दूध, नकली दवाइयां,घी, तेल, अनाज, दालें, जहरीले इंजेक्शन लगी सब्जी और फल बेचे जा रहे हैं। इन मिलावटी चीजों को खाकर लोग बीमार हो रहे हैं। अगर किसी सिंथेटिक जहरीले दूध बेचने वाले व्यापारी के अपने परिवार के लोग नकली दवाई खाने से बीमार हो जाएं तो क्या उस सिंथेटिक जहरीले दूध बेचने वाले व्यापारी को नकली दवाई बेचने वाले उस कैमिस्ट को दोष देने का नैतिक हक है?, क्योंकि उस दूधवाले का सिंथेटिक दूध पीने से तो न जाने कितने लोग रोज बीमार होते होंगे। ऐसा लगता है जैसे हम भूल चुके हैं कि समाज के प्रति हमारी कुछ जिम्मेदारियां भी हैं।

जीवन से खिलवाड़ करती मनुष्य के प्रति मनुष्य के संवेदनहीन जड़ होने की इन शर्मनाक एवं त्रासद घटनाओं को देखकर सरकार अथवा समाज कोई भी चिंतित नहीं दिखाई दे रहा है। ये घटनाएं हमारी इंसानियत पर एक करारा तमाचा मार रही हैं। इस तरह समाज के संवेदनहीन होने के पीछे हमारा संस्कारों से पलायन और नैतिक मूल्यों के प्रति उदासीनता दोषी है। हम आधुनिकता के चक्रव्यूह में फंसकर अपने रिश्तों, मर्यादाओं और नैतिक दायित्वों को भूल रहे हैं। समाज में निर्दयता और हैवानियत बढ़ रही है पर हम दुनिया में नैतिक एवं सभ्य होने का ढिंढोरा पीटते हैं, जबकि हमारे समाज की स्थितियां इसके विपरीत हैं, भयानक हैं।

हम एक दूसरे से आगे बढ़ने कि रेस में शामिल हैं। छोटी छोटी बातों में भी हम अपने संवेदनहीन होने का परिचय देते हैं। जैसे सड़क पर पहले जाने के लिए लेन तोड़ना, लाइन पर खड़े हों तो आगे जाने के लिए धक्का मुक्की करना, पैदल चलने वालों को रास्ता नहीं देना, एम्ब्युलेंस को आगे जाने नहीं देना, रास्ते में घायलों को छोड़कर निकल जाना, वृद्ध जनों की उपेक्षा और उनके साथ दुर्व्यवहार, महिलाओं पर अत्याचार और एक–दूसरे के विचारों के प्रति सम्मान में कमी होना।

किसी आगजनी में फंसे लोग हो या अन्य दुर्घटनाओं के शिकार लोग जब सहयोग एवं सहायता के लिए कराह रहे होते हैं तब हमारे संवेदनहीन समाज के तथाकथित सभ्य एवं समृद्ध लोग इन पीड़ित एवं परेशान लोगों की मदद करने की बजाय पर्सनल फोन से वीडियो बनाना ज्यादा जरूरी समझते हैं। गरीबों, बाढ़ पीड़ितों, सूखाग्रस्त इलाकों व अन्य आपदा पीड़ित लोगों के लिए जो राशि सरकार की तरफ से भेजी जाती है, उसे भ्रष्ट कर्मचारी एवं अधिकारी उन पीड़ितों को देने के बजाय उससे अपनी जेब भरते हैं। हम भले ही तकनीकी तौर पर उन्नति करके विकास कर रहे हैं लेकिन अपने मूल्यों, दायित्वों और संस्कारों को भुलाकर अवनति को गले लगा रहे हैं।

ऐसा लगता है कि कहीं न कहीं समाज की संरचना में कोई त्रुटि है तभी बच्चे अपने वृद्ध माता–पिता को घर से निकाल देते हैं, बहूओं के साथ दुर्व्यहार होता है, पति–पत्नी एक दूसरे का सम्मान नहीं करते, बच्चे आवेश में आकर हत्या/आत्महत्या तक के कठोर कदम उठा लेते हैं। समाज में बहुत–सी ऐसी घटनाएं सामने आती हैं जिन्हें देखकर तो ऐसा लगता है कि समाज बड़े गहरे संकट में फंस चुका है। समाज की बनावट में

कोई गहरा खोट है। इंसानियत, प्रेम और भाईचारे की भावनाएं दम तोड़ रही है। आज हम ऐसे समाज में जी रहे हैं, जहां हर इंसान फेसबुक और अन्य सोशल साइटों पर अपने दोस्तों की सूची को लंबा करने में व्यस्त है। लोग घंटों–घंटों का समय फेसबुक और व्हॉट्सअप पर दूरदराज बैठे अनजान मित्रों से बातचीत में बिताते हैं, लेकिन अपने आसपास के प्रति अपने दायित्व को नजर अंदाज करते हैं।

इसी बीच, इस तमाम तरह के संकट से जूझ रहे समाज का सामना जब कोविड महामारी से हुआ तो समाज के कुछ लोगों ने जिस तरह से पीड़ित लोगों की मदद की उसने यह साबित कर दिया कि हम पूरी तरह से जड़ नहीं हुए हैं। हमारी 2000 सालों के विरासत कि बुनियाद हममें अभी भी बाकी है। कुछ लोगों ने कोविड पीड़ित परिवारों को निःस्वार्थ भाव से खाना पहुंचाया, लावारिस लाशों का सम्मानजनक तरीके से अंतिम संस्कार किया, अपनी जान की परवाह किए बिना पीड़ितों को अस्पताल पहुंचाया, कई डॉक्टरों, नर्सों ने मरीजों के इलाज में अपनी जान गवां दी, लॉक डाउन के दौरान कई लोगों ने आगे बढ़कर मजदूरों को उनके घरों तक पहुंचाया तथा इंसानियत की मिशाल कायम की, इनको देखकर मन में आशा की एक किरण जागी है कि हम अभी पूरी तरह से संवेदनहीन नहीं हुए हैं। यदि हम ठान लें तो बेहतर समाज बना सकते हैं। जिसका आधार इंसानियत, भाईचारा एक दूसरे के विचारों का सम्मान हो तथा संवेदनशीलता, मानवता, परस्पर प्रेम की भावना एवं नैतिकता जिनके स्तंभ हों।

मैं कामना करती हूं कि हम सभी लोग सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण होकर समाज को श्रेष्ठ बनाएं तथा उसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

श्रीमती कुमारी कल्पना
प्रबंधक (सिविल)

नराकास के तत्वाधान में आयोजित ऑनलाइन राजभाषा हिंदी संगोष्ठी/प्रतियोगिता

राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2020–21 के पृष्ठ सं. 9 बिंदु सं. 30 तथा नराकास, दिल्ली (उपक्रम–2) के 23 जनवरी, 2020 की 6वीं बैठक के कार्यवृत्त के मद सं. 05 के अनुपालन में नराकास दिल्ली उपक्रम–2 के तत्वाधान में हमारे कार्यालय द्वारा 20.10.2020 को **कोरोना काल के दौरान सरकारी कार्यालयों में ऑनलाइन हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन–सार्थक या औपचारिकता विषय** पर श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) महोदय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–1 (दिल्ली) एंव श्री अशोक कुमार, सदस्य सचिव महोदय, नराकास दिल्ली उपक्रम–2 की उपस्थिति में ऑनलाइन राजभाषा हिंदी संगोष्ठी/प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राजभाषा संगोष्ठी में नराकास दिल्ली उपक्रम–2 के 21 सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधि शामिल हुए। राजभाषा हिंदी संगोष्ठी के लिए निर्धारित किए गए विषय पर एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें 19 वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए उनमें से पांच सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। नकद पुरस्कार की राशि विजेताओं के बैंक खाते में ऑनलाइन भेज दी गई है। विजेताओं का विवरण निम्नवत है।

क्रम संख्या	नाम	कार्यालय का नाम	पुरस्कार श्रेणी	पुरस्कार राशि
I	मोहम्मद जावेद अहमद खान	एनबीसीएफडीसी	प्रथम पुरस्कार	3100/– रूपए
2	श्री अनिल मेहता	पोसोको	द्वितीय पुरस्कार	2100/– रूपए
3	डॉ. राजा राम यादव	डीएमआरसी	तृतीय पुरस्कार	1100/– रूपए
4	सुश्री हर्षिता पाण्डेय	भारतीय जीवन बीमा निगम	सांत्वना पुरस्कार	750/– रूपए
5	श्रीमती वंदना चावला	एग्रीकल्चर इश्योरेंस कंपनी	सांत्वना पुरस्कार	750/– रूपए

जीना है तो खुश रहना सीखो

लहरों से जीवन में संघर्ष करना सीखो।
जीना है तो खुश रहना सीखो।।

समुंदर से शांत रहना सीखो।
जीना है तो खुश रहना सीखो।।

धरती से धीरज धरना सीखो।
जीना है तो खुश रहना सीखो।।

सूरज से तप तप कर कंचन बनना सीखो।
जीना है तो खुश रहना सीखो।।

बारिश से ठंडक और सुख भरना सीखो।
जीना है तो खुश रहना सीखो।।

जीवन है एक यात्रा इससे सदा ही चलना सीखो।
जीना है तो खुश रहना सीखो।।

श्री पवन कुमार वशिष्ठ
पर्यवेक्षक (डिजाइन)

उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा निरीक्षण

दिनांक 11.09.2020 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री कुमार पाल शर्मा महोदय ने हमारे कार्यालय का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी ई–निरीक्षण किया। उप निदेशक (कार्यान्वयन) महोदय ने कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया और श्री एच. भराली, कार्यालय प्रमुख से इस संबंध में विचार–विर्मश किया।

कार्यालय में राजभाषा हिंदी के किए गए कार्यों से संतुष्ट होकर उन्होंने इसकी बहुत ही सराहना की। जिसके बाद ई–निरीक्षण सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। निरीक्षण के दौरान श्री शांतनु बेजबरूवा, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी भी उपस्थित रहे।

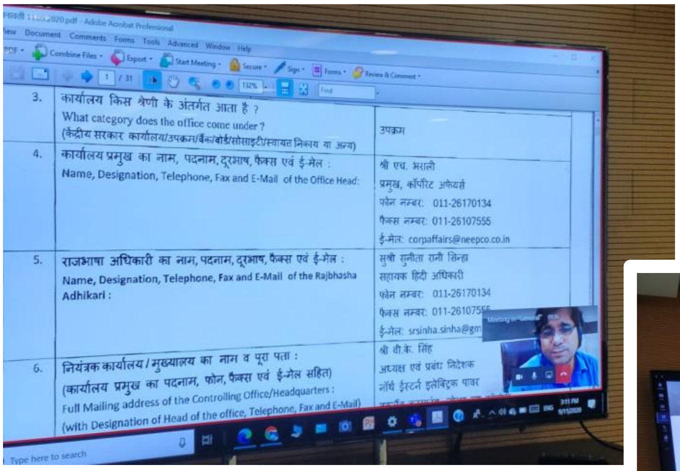

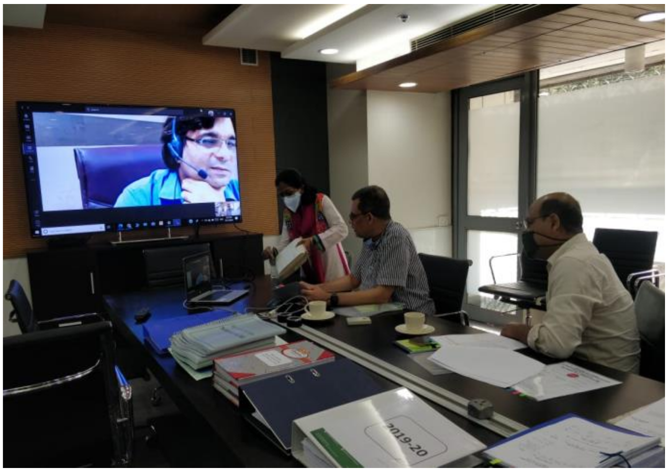

भारत का वीर सपूत–स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा

(या तो तू युद्ध में बलिदान देकर स्वर्ग को प्राप्त करेगा अथवा विजयश्री प्राप्त कर पृथ्वी का राज्य भोगेगा।) गीता के इसी श्लोक को प्रेरणा मानकर भारत के शूरवीरों ने कारगिल युद्ध में दुश्मन को पांव पीछे खींचने के लिए मजबूर कर दिया था।

26 जुलाई 1999 के दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत भूमि को घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया था। इसी की याद में अब हर वर्ष '26 जुलाई' को कारगिल दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन उन शहीदों को याद कर अपने श्रद्धा–सुमन अर्पण करने का है, जो हंसते–हंसते मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। यह दिन समर्पित है उन्हें, जिन्होंने अपना आज हमारे कल के लिए बलिदान कर दिया।

कारगिल युद्ध, भारत और पाकिस्तान के बीच 1999 में मई के महीने में कश्मीर के कारगिल जिले से प्रारंभ हुआ था। पूरे दो महीने से ज्यादा चले इस युद्ध में भारतीय सेना के जवानों ने पाकिस्तानी जवानों को चुन–चुनकर तो मारा ही था और इनमें कुछ भारतीय जांबाज ऑफिसर ऐसे भी थे जो पाकिस्तानी सीमा में घुसकर वहां भी अपने पराक्रम को दिखाने का हौंसला रखते थे। स्वतंत्रता का अपना ही मूल्य होता है, जो वीरों के रक्त से चुकाया जाता है। कारगिल युद्ध के वीरों में से एक वीर, कैप्टन विक्रम बत्रा की शौर्य गाथा मैंने आपको हमारी इसी पत्रिका के पिछले अंक में बताई थी। कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के कई वीर सपूत रहे है, जिनके शौर्य गाथा से हमारा सीना चौड़ा हो जाता है। ऐसे ही एक वीर सपूत थे स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा जिन्हें पाकिस्तान के जवानों ने बंधक बना लिया और फिर गोली मार दी।

बात 27 मई 1999 की है। कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सफेद सागर लॉन्च किया था, जिसका मकसद एलओसी पर पाकिस्तानी सेना की स्थिति का पता लगाना था। वायुसेना की भटिंडा स्थित गोल्डन–एरोज स्क्वाड्रन में अजय आहूजा फ्लाइट कमांडर थे, सेना ने उन्हें जिम्मेदारी दी कि वह पाक सेना की स्थिति की जानकारी देंगे। अजय आहूजा मिग–21 लेकर इस काम पर निकले लेकिन बीच में ही उन्हें जानकारी मिली कि पाकिस्तानी पोस्ट पर हवाई हमला करते वक्त फ्लाइट–लेफ्टिनेंट नचिकेता को अपना मिग–27 विमान आग लगने के कारण छोड़ना पड़ा है। उन्हें यह भी पता चला कि नचिकेता पाकिस्तानी सीमा में हैं और वहां उन्हें खोजने जाना जोखिम भरा हो सकता है फिर भी वह अपने साथी का पता लगाने पाक सीमा में घुसे जब वह नचिकेता की तलाश कर ही रहे थे कि उनके विमान से कोई चीज टकराई जिससे उसके इंजन में आग लग गई और उन्हें विमान से इजेक्ट होना पड़ा।

27 मई शाम साढ़े आठ बजे तक यह कंफर्म हो गया कि अजय आहूजा शहीद हो गए हैं। जब पाकिस्तान ने उनका शव सौंपा तो पता चला कि उनकी मौत प्लेन से कूदने की वजह से नहीं बल्कि बहुत पास से गोली मारने से हुई थी। कहते हैं कि पाक सैनिकों ने उन्हें तब तक गोलियां मारी जब तक कि वो मर नहीं गए थे। श्रीनगर स्थित बेस हॉस्पिटल में जब उनके शव का पोस्टमार्टम किया गया तो पता लगा कि आहूजा की हत्या पाकिस्तानी सैनिकों ने भारत की सीमा में ही की थी। पोस्टमार्टम में स्क्वाड्रन लीडर आहूजा के शरीर में दिल दहला देने वाले जख्मों का पता लगा था। उन्हें दाएं कान के पास से गोली मारी गई थी जो बाएं कान को चीरती हुई निकल गई थी। उनकी छाती पर एक गोली लगी थी, जिसकी वजह से उनका लिवर, आंत और बाकी अंग जख्मी हो गए थे। उनका बायां घुटना भी पूरी तरह से फ्रेक्चर्ड था। दायीं और बायीं जांघ की तरफ जख्म थे, दायां फेफड़ा पूरी तरह से जख्मी था। स्क्वाड्रन लीडर आहूजा की मृत्यु को कोल्ड ब्लडेड मर्डर करार दिया गया था।

हालांकि वे फ्लाइट लेफ्टिनेंट नचिकेता की तरह अपने वतन तो वापस नहीं लौट सके। लेकिन अपने साथी को बचाने में उनकी शहादत को हमेशा याद रखा जाएगा। स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा को 15 अगस्त, 1999 को मरणोपरांत 'वीर चक्र' से सम्मानित किया गया।

श्री शशांक सिंह
उप प्रबंधक (सिविल)

हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस, 2020

कोविड–19 महामारी के परिपेक्ष्य में केंद्र सरकार द्वारा समय–समय पर जारी दिशा–निर्देशों और मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) को ध्यान में रखते हुए कार्यालय में दिनांक 01.09.2020 से 15.09.2020 तक हिंदी पखवाड़ा तथा 14.09.2020 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषा–भाषी कार्मिकों के लिए दो वर्गों में हिंदी की चार प्रतियोगिताएं (हिंदी अनुवाद, हिंदी सुलेख, हिंदी स्लोगन एवं हिंदी अनुच्छेद लेखन) ऑनलाइन आयोजित की गई ताकि कार्मिकों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा सके। इन प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

कार्यालय की ओर से हिंदी के प्रति हमारे सांविधिक एवं संवैधानिक बाध्यता का स्मरण कराने हेतु पखवाड़े के दौरान प्रतिदिन कार्यालय के डिजिटल बोर्ड, निगम के आधिकारिक ट्विटर तथा फेसबुक पर हिंदी भाषा से संबंधी सूक्तियां लिखी गई। 14 सितम्बर, 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें घर से काम करने वाले कार्मिकों को भी ऑनलाइन शामिल किया गया। सर्वप्रथम श्री एच. भराली, कार्यालय प्रमुख महोदय ने दीप प्रज्जवलित करके समारोह का शुभारंभ किया। कार्यालय प्रमुख महोदय ने सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देने के साथ इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा दिए गए संदेश से सभी को अवगत करवाया। समारोह में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं वर्ष के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं के साथ ही कार्यालय में लागू की गई नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना के विजेताओं को नकद पुरस्कारों से भी पुरस्कृत किया गया। नकद पुरस्कार की राशि विजेताओं के बैंक खातों में भेज दी गई, इसके साथ ही 'रतनदीप' हिंदी पत्रिका के 8वें अंक को ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 2021 का आयोजन

08 मार्च 2021 को हमारे कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 2021 का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय संस्था की बहन बीके कंचन जी और बहन बीके निशा जी को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया। उन्होंने व्याख्यान देने के साथ ही ध्यान साधना भी करवाई, जिसका लाभ सभी कार्मिकों ने उठाया।

इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख महोदय के नेतृत्व में सभी महिला कार्मिकों ने वृक्षारोपण भी किया। कार्यालय द्वारा सभी के लिए लंच की व्यवस्था भी की गई थी, जिसका आनंद सभी ने उठाया।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

बंगाल के पुनर्जागरण के स्तंभों में से एक महान दार्शनिक, लेखक एवं समाज सुधारक ईश्वर चंद्र का जन्म 26 सितंबर 1820 को पश्चिमी मेदिनीपुर जिला, पश्चिम बंगाल में हिंदू ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ठाकुरदास बंद्योपाध्याय उनके पिता और भगवती देवी उनकी माता थी। ईश्वर चंद्र के बचपन का नाम ईश्वर चंद्र बंद्योपाध्याय था, उनका बचपन बेहद गरीबी में बीता। उन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई गांव में रहकर ही की। जब वह 6 साल के थे तब पिता के साथ कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) आ गए थे। उत्कृष्ट शैक्षिक प्रदर्शन के कारण उन्हें विभिन्न संस्थानों द्वारा कई छात्रवृत्तियां प्रदान की गई थी। वे उच्चकोटि के विद्वान तथा स्वतंत्रता सेनानी भी थे। ईश्वरचंद्र को गरीबों और दलितों का संरक्षक माना जाता था। उन्होंने नारी शिक्षा और विधवा विवाह कानून के लिए आवाज उठाई और अपने कार्यों के लिए समाज सुधारक के तौर पर पहचाने जाने लगे, लेकिन उनका कद इससे कई गुना बड़ा था। संस्कृत भाषा और दर्शन में अगाध ज्ञान होने के कारण विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की थी। इसके बाद से उनका नाम ईश्वर चंद्र विद्यासागर हो गया।

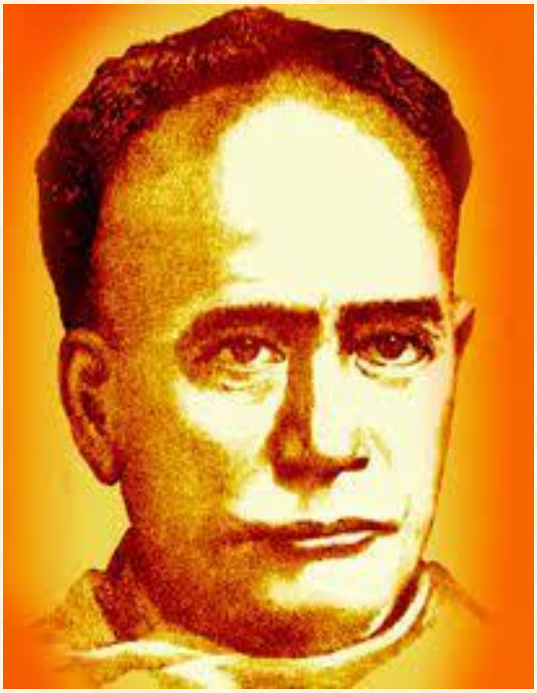

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने स्थानीय भाषा में शिक्षित करने और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूलों की एक श्रृंखला के साथ कोलकाता में मेट्रोपॉलिटन कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने इन स्कूलों को चलाने में आने वाले पूरे खर्च की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। स्कूलों के खर्च के लिए वह विशेष रूप से स्कूली बच्चों के लिए बांग्ला भाषा में लिखी गई अपनी किताबों की बिक्री से फंड जुटाते थे। वर्ष 1855 में जब उन्हें स्कूल–निरीक्षक/इंस्पेक्टर बनाया गया तो उन्होंने अपने अधिकार–क्षेत्र में आने वाले जिलों में बालिकाओं के लिए स्कूल सहित अनेक नए स्कूलों की स्थापना की थी। उच्च अधिकारियों को उनका ये कार्य पसंद नहीं आया और अंततः उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। वे बेथुन के साथ भी जुड़े हुए थे, जिन्होनें 1849 में कोलकाता में स्त्रियों की शिक्षा हेतु प्रथम स्कूल की स्थापना की थी।

उन्होंने विधवाओं के विवाह के लिए खूब आवाज उठाई और उसी का नतीजा था कि विधवा पुनर्विवाह कानून–1856 पारित हुआ। उन्होंने खुद एक विधवा से अपने बेटे की शादी करवाई थी। उन्होंने बहुपत्नी प्रथा और बाल विवाह के खिलाफ भी आवाज उठाई थी। उनके इन्हीं प्रयासों ने उन्हें समाज सुधारक के तौर पर पहचान दी। नैतिक मूल्यों के संरक्षक और शिक्षाविद् विद्यासागर का मानना था कि अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं के ज्ञान का समन्वय करके भारतीय और पाश्चात्य परंपराओं के श्रेष्ठ को हासिल किया जा सकता है। अपनी सहनशीलता, सादगी, देशभक्ति और एक शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रसिद्ध ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का लिवर कैंसर के कारण 29 जुलाई, 1891 को कोलकाता में निधन हो गया।

गत् वर्ष उनकी 200वीं जयंती मनाई गई उनके कुछ अनमोल वचन जो बड़े ही सार्थक हैं।

- शिक्षा का मतलब सिर्फ सीखना, पढ़ना, लिखना और अंकगणित नहीं है, यह व्यापक ज्ञान प्रदान करने वाली होनी चाहिए, भूगोल, ज्यामिति, साहित्य, प्राकृतिक दर्शन, नैतिक दर्शन, शरीर विज्ञान, राजनीतिक अर्थव्यवस्था आदि में शिक्षा बहुत जरूरी है। हमें ऐसे शिक्षक चाहिए, जो बंगाली और अंग्रेजी दोनों भाषाओं को जानते हों और उसी के साथ धार्मिक पूर्वाग्रहों से मुक्त हो।
- पीड़ा के बिना जीवन, नाविक के बिना एक नाव की तरह होता है, जिसमें स्वयं का विवेक नहीं है, वह एक हल्के हवा के झोंके में भी चल देता है।
- संयम विवेक देता है, ध्यान एकाग्रता प्रदान करता है। शांति, संतुष्टी और परोपकार मनुष्यता देते हैं।
- दूसरों के कल्याण से बड़ा दूसरा कोई नेक काम और धर्म नहीं होता।
- अपने हित से पहले समाज और देश का हित देखना एक विवेक युक्त सच्चे नागरिक का धर्म होता है।
- मनुष्य चाहे कितना भी बड़ा हो जाए, उसे सदा अपना अतीत याद करते रहना चाहिए।

इन अनमोल वचनों को अपनाकर हम सभी अपना जीवन उन्नत बना सकते हैं।

श्री जयंत गुप्ता चौधुरी
सहायक लेखा अधिकारी

कोरोना की वैक्सीन

अभी तक की स्थिति के अनुसार कोविड संक्रमण से ठीक होने की दिशा में अपने देश की स्थिति अन्य देशों की तुलना में सबसे बेहतर है। टेस्ट, ट्रेस और ट्रीटमेंट के साथ वैक्सीनेशन का ही असर है कि अपने देश के 3 करोड़ से ज्यादा लोग कोविड संक्रमण से मुक्त हो चुके हैं। यह संख्या दुनिया के किसी देश में कोविड संक्रमण से मुक्त होने वाले मरीजों में सबसे ज्यादा है। इसके बावजूद वैक्सीनेशन के बारे में लोगों के कुछ सवाल है कि क्या कोरोना की वैक्सीन लेना जरूरी है, इसके जवाब में एक्सपर्ट का यही कहना है कि कोरोना वैक्सीन स्वैच्छिक है यानी आपकी मर्जी है कि आप इसे ले या न लें। जबरदस्ती किसी को वैक्सीन नहीं दी जाएगी। लेकिन अगर आप अपने आपको बचाना चाहते हैं, अपने और अपने परिवार के सदस्यों की रक्षा करना चाहते हैं तो यह वैक्सीन लेनी चाहिए। कोरोना की वैक्सीन से संबंधित लोगों के सवाल और एक्सपर्ट के जवाब।

क्या कोरोना वैक्सीन लेना अनिवार्य है?

नहीं, किसी के लिए भी अनिवार्य नहीं है, यह वैक्सीनेशन प्रोग्राम पूरी तरह से स्वैच्छिक यानी वॉलेंट्री है। आपकी मर्जी पर है, अगर आप वैक्सीन लेना चाहते हैं तभी लें, आपके साथ कोई जबरदस्ती नहीं है। लेकिन, इस वायरस के खिलाफ अभी तक सिर्फ वैक्सीन ही बतौर इलाज मौजूद है, इसलिए इसे रोकना है तो वैक्सीनेशन जरूर कराएं।

कोरोना की वैक्सीन बहुत कम समय में लॉन्च की गई है, क्या वैक्सीन सेफ है?

देश में वैक्सीन को लॉन्च करने की अनुमति तभी मिलती है जब रेगुलेटरी बॉडी के मानक पर वैक्सीन की सेफ्टी और प्रभाव खरा उतरता है। सेफ्टी सबसे महत्वपूर्ण फैक्टर होता है इसके लिए जितने भी जरूरी फैक्टर हैं उसका सख्ती से पालन किया गया है और मानक पर खरा उतरने के बाद ही इसके इस्तेमाल की अनुमति मिली है। यही वजह है कि वैक्सीन सेफ, सुरक्षित और असरदार है, बिना डरे इसे जरूर लगवाएं। कोरोना खतरनाक बीमारी है। इससे बहुत हद तक वैक्सीन बचा सकती है। वैक्सीन पर भरोसा रखें और जब भी मौका मिले, वैक्सीनेशन करवा लें।

कोरोना के ऐक्टिव मरीजों को वैक्सीन लेनी चाहिए या नहीं?

कोरोना के ऐक्टिव मरीजों को वैक्सीन नहीं लेने की सलाह दी जाती है, क्योंकि अगर वे वैक्सिनेशन सैंटर पर जाएंगे तो उनकी वजह से टीका लगवाने आए अन्य लोगों को कोरोना का इन्फेक्शन होने का खतरा है। इसलिए जब ये मरीज ठीक हो जाएं तो उसके 4 हफ्ते बाद ही वैक्सिनेशन के लिए जाएं। कोरोना से उबरे मरीजों में एंटीबॉडी अपने आप बनती है, लेकिन ये एंटीबॉडी कब तक रहेगी, कह नहीं सकते। इसलिए ये लोग भी टीका जरूर लगवाएं। टीका इनकी इम्युनिटी को और मजबूत करेगा। कोरोना से ठीक होने के बाद भी इन्फेक्शन का खतरा रहता है।

कोरोना वैक्सीन लगने के बाद शरीर में क्या–क्या लक्षण दिख सकते हैं?

आम लक्षण में जहां पर वैक्सीन लगाई जाती है, वहां पर दर्द होता है। थोड़ा फीवर, सिर दर्द, थकान, बॉडी पेन हो सकता है। यह अपने आप ठीक हो जाता है। कुछ लोगों में सीवियर साइड इफेक्ट्स हो सकता है। जैसे–खुजली, चक्कर आना, छाती में जकड़न, सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। ऐसे लोगों को तुरंत इलाज की जरूरत हो सकती है। ये लक्षण वैक्सीनेशन के आधे घंटे में आ जाते है, इसलिए ऑब्जर्वेशन का नियम बना हुआ है।

वैक्सीनेशन के कितने दिनों बाद एंटीबॉडी बन जाती है?

वैक्सीनेशन की दूसरी डोज के 2 हफ्ते के बाद ही वायरस के खिलाफ बॉडी में पर्याप्त एंटीबॉडी बन जाती है। वैक्सीनेशन के बाद भी कोरोना संक्रमण से बचने के लिए तय निर्देशों का पालन करते रहें। इनमें मास्क लगाना, सुरक्षित दूरी बनाए रखना, खांसने–छींकने के दौरान एहतियात बरतना जैसे निर्देश शामिल हैं।

कोरोना वायरस से बचने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। शोधकर्ता वैज्ञानिक इस वायरस से छुटकारा पाने के लिए वैक्सीन के साथ ही दवा बनाने में भी जुटे हैं। सरकार द्वारा लगातार इस खतरनाक बीमारी से बचने के लिए कठोर कदम उठाए जा रहे हैं ताकि इस महामारी से निजात पा सकें। हम सबकी भी जिम्मेदारी बनती है कि हम सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का कड़ाई से पालन करें ताकि हमारा देश इस महामारी से जल्द से जल्द मुक्त हो सके।

श्रीमती गीता जया कुमार
निजी सचिव

साइखोम मीराबाई चानू

सिडनी ओलंपिक 2000 में देश को भारोत्तोलन में कांस्य पदक कर्णम मल्लेश्वरी ने दिलाया था। साइखोम मीराबाई चानू ने ओलंपिक खेलों की भारोत्तोलन स्पर्धा में भारत का 21 साल का इंतजार खत्म किया और 49 किग्रा स्पर्धा में रजत पदक जीतकर टोक्यो ओलंपिक 2021 में देश का खाता भी खोला।

मीराबाई चानू के भारोत्तोलक बनने की कहानी बड़ी ही प्रेरणादायक है।

इम्फाल से 200 किलोमीटर दूर नोंगपोक काकचिंग गांव के हिंदू परिवार में 08 अगस्त 1994 को मीराबाई का जन्म हुआ। उसके परिवार में माता, पिता, दो भाई और तीन बहनें हैं। भाई बहनों में सबसे छोटी मीराबाई चानू उस समय 10 वर्ष की थी जब वह अपने से चार साल बड़े भाई सैखोम सांतोम्बा मीतेई के साथ पास की पहाड़ी पर लकड़ी बीनने जाती थी। एक दिन उसका भाई लकड़ी का गठ्ठर नहीं उठा पाया, लेकिन मीरा ने उस गठ्ठर को आसानी से उठा लिया और वह उसे लगभग 2 किमी दूर अपने घर तक ले आई। शाम को पड़ोस के घर मीराबाई चानू टीवी देखने गई तो वहां जंगल से उसके गठ्ठर लाने की चर्चा चल पड़ी। उसकी मां बोली, बेटी आज यदि हमारे पास बैलगाड़ी होती तो तुझे गठ्ठर उठाकर न लाना पड़ता।

बैलगाड़ी कितने की आती है मां? मीराबाई ने पूछा, मां बोली इतने पैसों की जितने हम कभी जिंदगी भर देख न पाएंगे। मगर क्यों नहीं देख पाएंगे, क्या पैसा कमाया नहीं जा सकता? कोई तो तरीका होगा बैलगाड़ी खरीदने के लिए पैसा कमाने का? चानू ने पूछा तो तब गांव के एक व्यक्ति ने कहा, तू तो लड़कों से भी अधिक वजन उठा लेती है, यदि वजन उठाने वाली खिलाड़ी बन जाए तो एक दिन जरूर भारी–भारी वजन उठाकर खेल में सोना जीतकर उस मैडल को बेचकर बैलगाड़ी खरीद सकती है। उसने कहा अच्छी बात है मैं सोना जीतकर उसे बेचकर बैलगाड़ी खरीदूंगी। उसमें आत्मविश्वास था। उसने वजन उठाने वाले खेल के बारे में जानकारी हासिल की, लेकिन उसके गांव में वैट्लिफ्टिंग सेंटर नहीं था, इसलिए उसने रोज़ ट्रेन से 60 किलोमीटर का सफर तय करने का सोचा और इंफाल के खुमन लंपक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स से उसने वैट्लिफ्टिंग की शुरूआत की।

एक दिन चानू की ट्रेन लेट हो गई..... रात का समय हो गया। शहर में उसका कोई ठिकाना न था, कोई उसे जानता भी न था। उसने सोचा कि किसी मन्दिर में शरण ले लेगी और कल अभ्यास करके फिर अगले दिन शाम को गांव चली जाएगी। एक अधूरा निर्माण हुआ भवन उसने देखा जिस पर आर्य समाज मंदिर लिखा हुआ था। वह उसमें चली गई। वहां उसे एक पुरोहित मिले, जिसे उसने बाबा कहकर पुकारा और रात को शरण मांगी। बाबा बोले, बेटी मैं आपको शरण नहीं दे सकता, यह मन्दिर है और यहां एक ही कमरे पर छत है, जिसमें मैं सोता हूं। दूसरे कमरे पर छत अभी डली नहीं, एंगल पड़ गए हैं, पत्थर की सिल्लियां आई पड़ी हैं लेकिन पैसे खत्म हो गए। तुम कहीं और शरण ले लो। मैं रात में कहां जाउंगी बाबा, मीराबाई आगे बोली, मुझे बिना छत के कमरे में ही रहने की इजाजत दे दो। अच्छी बात है, जैसी तेरी मर्जी, बाबा ने कहा। वह उस कमरे में माटी एकसार करके उसके उपर ही सो गई, अभी कमरे में फर्श तो डला नहीं था। जब छत नहीं थी तो फर्श कहां से होता भला। लेकिन रात के समय बूंदाबांदी शुरू हो गई और उसकी आंख खुल गई।

मीराबाई ने छत की ओर देखा। दीवारों पर उपर लोहे की एंगल लगी हुई थी, लेकिन सिल्लियां तो नीचे थी। आधी अधूरी सीढ़ियां भी बनी हुई थी। उसने नीचे से पत्थर की सिल्लियां उठाई और उपर एंगल पर जाकर रख दी और फिर थोड़ी ही देर में दर्जनों सिल्लियां कक्ष की दीवारों के उपर लगी एंगल पर रखते हुए कमरे की छत को ढक दिया। वहां एक बरसाती पन्नी पड़ी थी वह उसने सिल्लियों पर डालकर नीचे से फावड़ा और तसला उठाकर मिट्टी भर–भरकर उपर छत पर रखी सिल्लियों के उपर डाल दिया। इस प्रकार मीराबाई ने छत तैयार कर दी। बारिश तेज हो गई और वह अपने कमरे में आ गई। अब उसे भीगने का डर न था, क्योंकि उसने उस कमरे की छत खुद ही बना डाली थी। अगले दिन बाबा को जब सुबह पता चला कि मीराबाई ने कमरे की छत डाल दी तो उन्हें आश्चर्य हुआ और उन्होंने उसे मन्दिर में हमेशा के लिए शरण दे दी, ताकि वह खेल की तैयारी वहीं रहकर कर सके, क्योंकि वहां से खुमन लंपक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स निकट था। बाबा उसके लिए खुद चावल तैयार करके खिलाते समय मिलने पर बाबा उसे एक किताब थमा देते, जिसे वह पढ़कर उन्हें सुनाया करती। इस किताब से उसके अन्दर धर्म के प्रति आस्था तो जागी ही साथ ही देशभक्ति भी जाग उठी।

2017 में विश्व भारोत्तोलन चैंपियनशिप, अनाहाइम, कैलीफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका में उसे भाग लेने का अवसर मिला। मुकाबले से पहले एक सहभोज में उसे भाग लेना पड़ा। सहभोज में अमेरिकी राष्ट्रपति मुख्य अतिथि थे। राष्ट्रपति ने देखा कि मीराबाई को अलग से चावल परोसा गया, जबकि सब होटल के शानदार शाही भोजन का लुत्फ ले रहे थे। राष्ट्रपति ने प्रश्न किया, इस खिलाड़ी को अलग से चावल क्यों परोसा गया, इससे भेदभाव किया जा रहा है, यह अछूत है क्या? नहीं महामहिम ऐसी बात नहीं है, उन्हें खाना परोस रहे लोगों से जवाब मिला, इसका नाम मीराबाई है। यह जिस भी देश में जाती है, वहां अपने भारत देश के चावल ले जाती है, यहां भी ये चावल खुद ही अपने कमरे से उबालकर लाई है। ऐसा क्यों? राष्ट्रपति ने मीराबाई की ओर देखते हुए उससे पूछा मीराबाई ने कहा महामहिम, मेरे देश का अन्न खाने के लिए देवता भी तरसते हैं, इसलिए मैं अपने ही देश का अन्न खाती हूं।

राष्ट्रपति बोले, ओह बहुत देशभक्त हो तुम, जिस गांव में तुम्हारा जन्म हुआ, भारत में जाकर उस गांव के मैं एक बार अवश्य दर्शन करूंगा। महामहिम इसके लिए मेरे गांव में जाने की क्या जरूरत है? मेरा गांव मेरे साथ है, मैं उसके दर्शन यहीं करा देती हूं। अच्छा कराइए दर्शन! कहते हुए उस लड़की की बात पर हंस पड़े राष्ट्रपति। मीराबाई अपने साथ हैंडबैग लिए हुए थी, उसने उसमें से एक पोटली खोली, फिर उसे पहले खुद माथे से लगाया फिर राष्ट्रपति की ओर करते हुए बोली, यह रहा मेरा पावन गांव और महान देश। यह क्या है? राष्ट्रपति पोटली देखते हुए बोले, इसमें तो मिट्टी है? हां यह मेरे गांव की पावन मिट्टी है, इसमें मेरे देश के देशभक्तों का लहू मिला हुआ, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद का लहू इस मिट्टी में मिला हुआ है, इसलिए यह मिट्टी नहीं, मेरा सम्पूर्ण भारत हैं...

ऐसी शिक्षा तुमने किस विश्वविद्यालय से पाई चानू? चानू ने कहा महामहिम ऐसी शिक्षा विश्वविद्यालय में नहीं दी जाती, विश्वविद्यालय में तो मैकाले की शिक्षा दी जाती है, ऐसी शिक्षा तो गुरु के चरणों में मिलती है, मुझे आर्य समाज मंदिर में हवन करने वाले बाबा से यह शिक्षा मिली है, मैं उन्हें सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ को पढ़कर सुनाती थी, उसी से मुझे देशभक्ति की प्रेरणा मिली। सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ? हां सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ, चानू ने अपने हैंडबैग से सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ की एक प्रति निकाली और राष्ट्रपति को थमा दी, आप रख लीजिए मैं हवन करने वाले बाबा से और ले लूंगी। राष्ट्रपति ने वह किताब एक अधिकारी को देते आदेश दिया, इस किताब को अनुसंधान के लिए भेज दो कि इसमें क्या है, जिसे पढ़ने के बाद इस लड़की में इतनी देशभक्ति उबाल मारने लगी कि अपनी ही धरती के चावल लाकर हमारे सबसे बड़े होटल में उबालकर खाने लगी। उनके मुख से बस यही निकला, यकीनन कल का गोल्ड मैडल यही लड़की जीतेगी, देवभूमि का अन्न जो खाती है यह और अगले दिन मीराबाई ने स्वर्ण पदक जीत ही लिया, लेकिन किसी को इस पर आश्चर्य नहीं था, सिवाय भारत की जनता के.... अमेरिका तो पहले ही जान चुका था कि वह जीतेगी, बीबीसी जीतने से पहले ही लीड़ खबर बना चुका था। जीतते ही बीबीसी पाठकों के सामने था, जबकि भारतीय मीडिया अभी तक लीड खबर आने का इंतजार कर रही थी।

चानू ने 2014 में राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता। महिला वरिष्ठ राष्ट्रीय भारोत्तोलन चौम्पियनशिप, 2016 में स्वर्ण पदक। 2017 में अनाहेम, यूएसए में विश्व भारोत्तोलन चौम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। 196 किग्रा का वजन उठाकर भारत को 2018 के राष्ट्रमण्डल खेलों का पहला स्वर्ण पदक दिलाया। इसके साथ ही उन्होंने 48 किग्रा श्रेणी का राष्ट्रमण्डल खेलों का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। 2018 में उन्हें भारत सरकार ने पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें 2018 में माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी द्वारा राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। 2018 राष्ट्रमण्डल खेलों में विश्व कीर्तिमान के साथ स्वर्ण जीतने पर मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने 15 लाख रूपए की नकद धनराशि देने की घोषणा की। यह पुरस्कार मिलने पर मीराबाई ने सबसे पहले अपने घर के लिए एक बैलगाड़ी खरीदी और बाबा के मन्दिर को पक्का करने के लिए एक लाख रुपए उन्हें गुरु दक्षिणा में दिए।

टोक्यो ओलंपिक 2021 में रजत पदक जीतकर मीराबाई चानू ने मणिपुर के साथ–साथ पूरे भारत का नाम विश्व भर में रौशन किया, भारत को इनसे आगे भी कई उम्मीदें है।

श्रीमती वांगमु रीजीजू
कनिष्ठ अभियंता (ई/एम)

75वां स्वतंत्रता दिवस

आजादी सभी मनुष्यों का जन्मसिद्ध अधिकार है, करीब दो सौ सालों की गुलामी के बाद वर्ष 1947 में जब भारत आजाद हुआ तो उसमें कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान की आहुति दी। इसके बाद से हर साल 15 अगस्त को भारत की स्वतंत्रता की वर्षगांठ के रूप में मनाया जाता है। इस दिन हम अपने राष्ट्र गौरव तिरंगे को सम्मान देते हैं, साथ ही उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों को भी याद करते हैं जिनकी वजह से हमें आजादी मिली थी।

स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ को भारत सरकार 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तौर पर मना रही है। आजादी के 75 साल का ये जश्न 12 मार्च 2021 से शुरू हो चुका है और 15 अगस्त 2023 को इसका समापन होगा। देश का हर नागरिक इसे अपने अपने तरीके से मनाने की योजना बना रहा है। स्वतंत्रता दिवस का मुख्य समारोह लालकिले पर आयोजित किया गया। हमारे कार्यालय में भी 75वां स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख श्री एच. भराली महोदय ने राष्ट्रीय झंडा फहराया और सभी ने मिलकर राष्ट्रीय गीत गाया।

अपने देश में आयकर 24 जुलाई 1860 को सर जेम्स विल्सन द्वारा आरंभ किया गया था। यह ऐसा कर था जो अमीरों, शाही परिवारों और ब्रिटिश नागरिकों पर लगाया जाता था और इसलिए इसे शक्तिशाली लोगों द्वारा पसंद नहीं किया जाता था। प्रारंभिक वर्ष में इस कर द्वारा राजकोष में कुल 30 लाख रुपए की राशि जमा की गई। कर की दरें स्थूल और तैयार आकलन पर आधारित होती थी।

आधुनिक समय में आयकर व्यक्ति की आय पर लगाया जाने वाला एक वार्षिक कर है। भारतीय आयकर अधिनियम में बताया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पिछले वर्ष में प्राप्त की गई कुल आय पर संगत आकलन के लिए आयकर प्रभारित किया जाएगा। आयकर अधिनियम की धारा 14 में पुनः बताया गया है कि आयकर के प्रभार का प्रयोजन और वेतन, गृह संपत्ति से आय, व्यापार या पेशे से लाभ और प्राप्तियां, पूंजी लाभ, अन्य स्रोतों से होने वाली आय से कुल आय की गणना की जाएगी।

उपरोक्त सभी शीर्षों की कुल आय से अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार आय की गणना की जाती है, जो किसी भी आकलन वर्ष के अप्रैल माह की पहली तिथि पर होते हैं। कराधान नियमों के अनुसार किसी कमाई करने वाले व्यक्ति/इकाई के लिए अनिवार्य है कि वह इस तथ्य के बावजूद अपना आयकर रिटर्न जमा करे कि उसके नियोक्ता द्वारा स्रोत पर उसके कर में कटौती की गई है या नहीं और चाहे वह राशि वापस पाने का पात्र है या नहीं। आयकर रिटर्न भरने की ई–फाइलिंग सुविधा आयकर विभाग द्वारा आकलन वर्ष 2006–07 के दौरान पहली बार आरंभ की गई थी। उसी समय से अब हर वर्ष ई–फाइलिंग द्वारा आयकर रिटर्न भरे जाते है।

आकलन वर्ष 2021–22 के लिए नया आयकर रिटर्न (आईटीआर) फॉर्म जारी कर दिया गया है। CBDT ने कोरोना वायरस महामारी को देखते हुए अधिसूचित किए गए नए फॉर्म में खास बदलाव नहीं किया है। इसके लिए वित्त मंत्रालय ने कहा है कि आयकर कानून की धारा 1961 में संशोधन की वजह से आईटीआर–1 से लेकर आईटीआर–7 फॉर्म में सिर्फ जरूरी बदलाव किए गए हैं। साथ ही फॉर्म भरने के तरीके में भी कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

CBDT की ओर से जारी नए आईटीआर फॉर्म https:@@egazette-nic-in@WriteReadData@2021@226336-pdf लिंक पर उपलब्ध है। इस लिंक से फॉर्म को डाउनलोड किया जा सकता है।

किसके लिए कौन सा फॉर्म

इनकम टैक्स रिटर्न फॉर्म–1 और फॉर्म 4 सबसे आसान हैं। इनका इस्तेमाल छोटे और मझोले करदाता करते हैं। सालाना 50 लाख रुपये तक की आय वाले टैक्सपेयर्स सहज यानी फॉर्म–1 का इस्तेमाल कर आईटीआर दाखिल करते हैं। साथ ही सिर्फ वेतन, एक घर या ब्याज से आय पाने वाले करदाता भी सहज फॉर्म–1 से आईटीआर फाइल करते हैं। वहीं, आईटीआर दाखिल करने के लिए सुगम यानी फॉर्म–4 का इस्तेमाल 50 लाख रुपये तक की सालाना आमदनी वाले हिंदू अविभाजित परिवार (HUF) और फर्म करती हैं। साथ ही कारोबार या प्रोफेशन से आय हासिल करने वाले लोग भी इसी फॉर्म के जरिए आईटीआर भरते हैं।

आईटीआर–1 (सहज): छोटे एवं मध्यम करदाता, जिनकी सालाना आय 50 लाख रुपये तक है। साथ ही जिनका कमाई का जरिया सिर्फ वेतन और एक घर या ब्याज जैसे अन्य सोर्स है।

आईटीआर–2: जिन व्यक्तिगत करदाताओं और हिंदू अविभाजित परिवार की कमाई किसी कारोबार या प्रोफेशन से न हो। साथ ही वह सहज फॉर्म भरने की योग्यता न रखते हों।

आईटीआर–3: जिन व्यक्तिगत करदाताओं और हिंदू अविभाजित परिवार की कमाई किसी कारोबार या प्रोफेशन से हो।

आईटीआर–4 (सुगम): यह फॉर्म हिंदू अविभाजित परिवार और कंपनियों की ओर से भरा जाता है, जिनकी किसी कारोबार या प्रोफेशन से सालाना कमाई 50 लाख रुपये तक हो।

आईटीआर–5: हिंदू अविभाजित परिवार, भागीदारी वाली कंपनियां, एलएलपी इस फॉर्म को भर सकती हैं।

आईटीआर–6: कंपनियां इस फॉर्म को भर सकती हैं।

आईटीआर फॉर्म–7: आयकर अधिनियम के तहत छूट का दावा करने वाली ट्रस्ट, राजनीतिक पार्टियां और चौरिटेबल इंस्टिट्यूशन आईटीआर फॉर्म–7 के जरिये आईटीआर फाइल कर सकती हैं।

वित्त कानून–2021 के जरिए सऊदी अरब/संयुक्त अरब अमीरात/ओमान/कतर में काम करने वाले भारतीय कामगारों के मामले में कोई नया या अतिरिक्त कर नहीं लगाया गया है। खाड़ी देशों में काम करने वाले भारतीय कामगारों को उनकी वेतन आय पर कर छूट मिलती रहेगी।

श्री अमिताभ चौधुरी
वरिष्ठ लेखाकार (एस.जी.)

हिंदी "पारंगत" पाठ्यक्रम

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के बाद संघ का अधिकाधिक सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में किए जाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा वर्ष 1952 से शिक्षा मंत्रालय के अधीन हिंदी प्रशिक्षिण कार्यक्रम आरंभ किए गए। उसके बाद वर्ष 1955 से हिंदी प्रशिक्षण का कार्य गृह मंत्रालय के अधीन कर दिया गया। वर्तमान में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना द्वारा केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों तथा इसके स्वामित्व अथवा नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, निगमों, निकायों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों के हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखने वाले हिंदीतर भाषा–भाषी कार्मिकों को प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ पाठ्यक्रमों के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

देश भर में संचालित प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण–नियमित, गहन, पत्राचार और लीला एप्प के माध्यम से दिए जाने के बाद भी लगातार यह महसूस किया जा रहा था कि प्राज्ञ परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने वाले हिंदीतर भाषा–भाषी अथवा मैट्रिक स्तर पर हिंदी की पढ़ाई करने वाले कार्मिक भी हिंदी पुस्तकें, उपन्यास, पत्र–पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि पढ़ने तथा कार्यालयीन काम चलाऊ हिंदी लिखने में तो सक्षम हो जाते हैं लेकिन जहां तक प्रशासन/वित्त/नीतिगत मामले, विज्ञान और प्रौद्योगिकी आदि विभिन्न विषयों पर फाईलों आदि पर मूल रूप से टिप्पणी और मसौदा लिखने का प्रश्न है, वहां प्रशासन और कार्यालय की भाषा पर व्यापक पकड़ सहित दक्षता और आत्मविश्वास की कमी उनके आड़े आती है। इन्हीं कारणों से राजभाषा हिंदी कार्यालयीन कार्य में गति नहीं पकड़ पा रही है।

इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ही संसदीय राजभाषा समिति द्वारा अपने प्रतिवेदन–7 की स्वीकृत सिफारिश संख्या 16.7 (क) में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में प्रवीणता प्राप्त करवाने के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार करने के निदेश दिए गए थे। जिनके अनुपालन में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा सभी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन हिंदी में दक्ष बनाने हेतु प्राज्ञ से उच्च स्तर की विषय वस्तु पर आधारित "पारंगत" पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

"पारंगत" पाठ्यक्रम मुख्यतः अभ्यास आधारित है जिसमें कुल प्रशिक्षण समय का 80 प्रतिशत समय अभ्यास एवं 20 प्रतिशत समय सैद्धांतिक पाठों की चर्चा के लिए ररवा गया है। पाठ्यक्रम की अवधि 5 महीने एकांतर दिवस 2 घंटे या प्रतिदिन 1 घंटा है। कोरोना काल के दौरान यह पाठ्यक्रम ऑनलाइन चलाए जा रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2021–22 से "पारंगत" पाठ्यक्रम को व्यापक व लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्र सरकार के कार्मिकों को "पारंगत" प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तीर्ण होने पर निम्नलिखित एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान करने का निम्नानुसार निर्णय लिया गया है:–

क.	55 प्रतिशत से 59 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर	4000/–रूपए
ख.	60 प्रतिशत से 69 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर	7000/–रूपए
ग.	70 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर	10000/–रूपए

उपरोक्त प्रोत्साहन संबंधी वित्तीय खर्च को संबंधित मंत्रालयों/विभागों को ही वहन करना पड़ेगा। वर्ष 2021 में हमारे कार्यालय से जनवरी–मई 2021 सत्र की ऑनलाइन/नियमित हिंदी "पारंगत" पाठ्यक्रम की दीर्घकालिक कक्षाओं के लिए 07 कार्मिकों और जुलाई–नवम्बर 2021 सत्र की कक्षाओं के लिए 04 कार्मिकों का नामांकन किया गया है।

हिंदी के राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

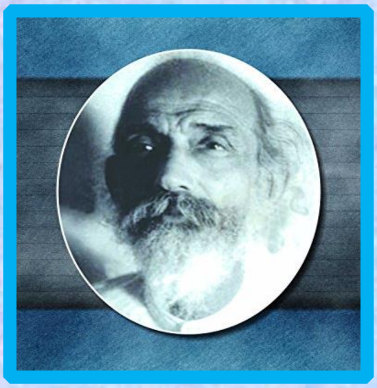

''लोग कहते हैं कि मैं राजनीति और साहित्य से समन्वित दोहरा व्यक्तित्व रखता हूं पर सच्ची बात यह है कि मैं पहले साहित्य में आया और प्रेम से आया। हिंदी साहित्य के प्रति मेरे उसी प्रेम ने उसके हितों की रक्षा और विकास पथ को स्पष्ट करने के लिए मुझे राजनीति में सम्मिलित होने को बाध्य किया।''

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

हिंदी भाषा को देश की राजभाषा बनाने में कई महान लोगों ने योगदान दिया है। आजादी के बाद भी हिंदी को अपने वर्चस्व के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। ऐसे में कई महापुरुष ऐसे भी थे जिन्होंने हिंदी को उसका स्थान दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। ऐसे ही महापुरुष थे भारत रत्न से सम्मानित राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन। हिंदी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करवाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी पंक्ति के नेता होने के साथ–साथ पुरुषोत्तम दास टंडन जी हिंदी के अनन्य सेवक, कर्मठ पत्रकार, तेजस्वी वक्ता और समाज सुधारक भी थे।

पुरुषोत्तम दास टंडन का जन्म 1 अगस्त, 1882 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद स्थित सिटी एंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल में हुई। सन् 1894 में उन्होंने इसी स्कूल से मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1899 में वे कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए और उसी साल इण्टरमीडिएट की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। 1920 और 1930 के दशक में उन्होंने असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गए। वे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए। पुरुषोत्तम दास टंडन कृषक आंदोलनों से भी जुड़े रहे और सन् 1934 में बिहार प्रादेशिक किसान सभा के अध्यक्ष भी रहे। वे लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित 'लोक सेवा मंडल' के भी अध्यक्ष रहे। वे उत्तर प्रदेश के विधान सभा के 13 साल तक अध्यक्ष रहे। उन्हें 1946 में भारत के संविधान सभा में भी सम्मिलित किया गया।

स्वतंत्रता संग्राम में अपनी अहम भूमिका निभाने के साथ ही राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने 10 अक्टूबर, 1910 को नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी के प्रांगण में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। इसी क्रम में 1918 में उन्होंने 'हिंदी विद्यापीठ' और 1947 में 'हिंदी रक्षक दल' की स्थाना की। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन हिंदी के प्रबल पक्षधर थे। वह हिंदी में भारत की मिट्टी की सुगंध महसूस करते थे। हिंदी साहित्य सम्मेलन के इंदौर अधिवेशन में स्पष्ट घोषणा की गई कि अब से राजकीय सभाओं, कांग्रेस की प्रांतीय सभाओं और अन्य सम्मेलनों में अंग्रेजी का एक शब्द भी सुनाई न पड़े। हिंदी को राष्ट्रभाषा और 'वन्देमातरम' को राष्ट्रगीत स्वीकृत कराने के लिए टण्डन जी ने अपने सहयोगियों के साथ एक और अभियान भी चलाया था। उन्होंने करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर और समर्थन पत्र भी एकत्र किए थे।

भारतवर्ष में स्वतंत्रता के पूर्व से ही साम्प्रदायिकता की समस्या अपने विकट रूप में विद्यमान रही। कुछ नेताओं ने टंडन जी पर भी सांप्रदायिक होने का आरोप लगाया। 'हिंदी प्रचार सभाओं' के माध्यम से उन्होंने हिंदी को अग्र स्थान दिलाया। महात्मा गांधी और दूसरे नेता 'हिन्दुस्तानी' (उर्दू और हिंदी का मिश्रण) को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे पर राजर्षि जी ने देवनागरी लिपि के प्रयोग पर बल दिया और हिंदी में उर्दू लिपि और अरबी–पारसी शब्दों के प्रयोग का भी विरोध किया। हिंदी का पुरजोर समर्थन करने वाले राजर्षि जी पर अकसर हिंदी का अधिक समर्थन और अन्य भाषाओं को नजरअंदाज करने का आरोप लगता रहा है। 1961 में हिंदी भाषा को देश में अग्रणी स्थान दिलाने में अहम भूमिका निभाने के लिए उन्हें देश का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार दिया गया। 23 अप्रैल, 1961 को उन्हें भारत सरकार द्वारा 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया। वे तो इस उपाधि से भी कहीं बड़े थे। वे वास्तव में राजनीति में सर्वोच्च पदों पर रहते हुए ऋषि बने रहे। उन्होंने 'राजर्षि' उपाधि का सम्मान बढ़ाया। 1 जुलाई, 1962 को हिंदी के राजर्षि, महान संत, साहित्यकार, राजनेता, एवं समाजसेवी का देहावसान हो गया।

श्री सुभाष चंद शर्मा
अभियांत्रिकी पर्यवेक्षक

वीरों का कैसा हो वसंत

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार;
सब पूछ रहें हैं दिग–दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुंचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग अंग;
है वीर देश में किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान;
मिलने को आए आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत

गलबाहें हो या कृपाण
चलचितवन हो या धनुषबाण
हो रसविलास या दलितत्राण;
अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग;
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत

हल्दीघाटी के शिला खण्ड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड;
दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छंद नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं;
फिर हमें बताए कौन हंत
वीरों का कैसा हो वसंत

नकद पुरस्कार प्रोत्साहन योजना

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने एवं सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के उद्देश्य से कार्यालय में नकद पुरस्कार योजना लागू है। जिसके अंतर्गत वित्तीय वर्ष के दौरान 10,000 शब्द लिखने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार देने का प्रावधान है। प्रोत्साहन हेतु 5000/– रूपए मात्र की राशि के दो प्रथम पुरस्कार, 3000/– रूपए मात्र की राशि के तीन द्वितीय पुरस्कार एवं 1500/– रूपए मात्र की राशि के पांच तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाते है।

वर्ष 2020–21 के दौरान इस योजना के तहत 03 विजेता है। हिंदी दिवस, 2021 के अवसर पर विजेताओं को ई–भुगतान के माध्यम से नकद पुरस्कार की राशि का भुगतान किया जाएगा।

क्रम संख्या	नाम एवं पदनाम	पुरस्कार	राशि (रूपए में)
1.	श्रीमती एलिजाबेथ पिरबट, उप महाप्रबंधक (ई)	प्रथम	5000/–
2.	श्री सुभाष चंद शर्मा, अभियांत्रिकी पर्यवेक्षक	प्रथम	5000/–
3.	श्रीमती वांगमु रीजीजू, कनिष्ठ अभियंता (ई)	द्वितीय	3000/–

हिंदी में प्रवीणता एवं हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान

हिंदी में प्रवीणता–

यदि किसी कर्मचारी ने–

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है;या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

(ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान–

यदि किसी कर्मचारी ने–

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा जो विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है;या

केंद्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

कोरोना काल में बचपन

मैं एक छठी कक्षा की छात्रा हूं। इस कोरोना काल में मेरे जैसे कई बच्चों की जिंदगी मोबाइल या लैपटॉप पर निर्भर हो गई है। मेरी कक्षा रोज सुबह आठ बजे से शुरू होती है और बारह बजे तक चलती है, उसके बाद गृहकार्य, कोचिंग तथा स्कूल के अन्य कार्य करने पड़ते हैं। जिसके लिए सुबह आठ बजे से रात के आठ बजे तक मोबाइल या लैपटॉप पर लगे रहना पड़ता है। यह हमारी आंखों के लिए और शरीर के लिए बहुत ही हानिकारक हो रहा है। इसके साथ ही बहुत सारे अध्यापक एवं अध्यापिकाएं कहते हैं कि पढ़ाई के दौरान हर समय लैपटॉप पर ऑनलाइन मौजूद रहें, जो हमारे मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। हमारा बाहर जाना और दोस्तों के साथ खेलना—कूदना बिल्कुल बंद हो गया है।

इन सभी परिस्थितियों में हमारा जीवन बेहद दुखद हो गया है। हम खाली समय में बैठे बैठे अपने पुराने दिनों के बारे में ही सोचते हैं कि वह दिन कब आएंगे जब हम फिर से स्कूल जाएंगे और अपने दोस्तों के साथ खेलेंगे उनसे बहुत सारी बातें करेंगे। अपने परिवार के सदस्यों के साथ बाहर घूमने जाएंगे। हम यही आशा करते हैं कि कोरोना जल्दी से चला जाए और हम अपने स्वाभाविक जीवन में वापस लौट आएं। हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते है कि हमारा पुराना जीवन हमें वापस लौटा दें ताकि हम सभी हंसी खुशी से रह पाएं और हमारी जीवन यात्रा पहले की तरह शुरू हो जाए।

कुमारी प्राप्ति चौधुरी
सुपुत्री श्री अमिताभ चौधुरी

संक्षिप्त वाक्यांश

हिंदी में सारा काम केवल यूनीकोड में किया जाए	All the work of Hindi may be done only in Unicode
उपर्युक्त	Above mentioned
इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है	Action has already been taken in the matter
नियमों एवं शर्तों के अनुसार	According to the terms and conditions
काम पर लौटें	Back to work
मामले की पृष्ठभूमि	Background of the case
जांच की और सही पाया	Checked and found correct
वित्त विभाग की सहमति आवश्यक है	Concurrence of the Finance Department is necessary
विधिवत भरा हुआ	Duly filled in
नीचे की पंक्तियों को हटा दीजिए	Delete the following lines
अतिरिक्त/ज्यादा भुगतान की वसूली की जाए	Excess payment may be recovered
अनुरोध है कि इस मामले में शीध्र कार्रवाई करें	Early action in the matter is requested
आवश्यक कार्रवाई के लिए	For necessary action
अनुमोदन के लिए	For approval
अग्रेषित और संस्तुत	Forwarded and recommended

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(एक मिनी रत्न भारत सरकार का उद्यम)

सीआईएन/U40101ML1976GO1001658

निगमित मामला

15 एनबीसीसी टॉवर, यूजी फ्लोर

भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली -110066

कॉर्पोरेट कार्यालय: ब्रूकलैंड कंपाउंड, लोअर न्यू कॉलोनी, शिलांग-793 003,मेघालय

बेबसाइट/website: www.neepco.co.in

Join us: /NEEPCOIndia /NEEPCOIndia